

# सूक्ष्म शरीर का जगत

ओशो



प्रश्न— एक और मित्र ने पूछा है, आत्मा शरीर के बाहर चली जाए, तो क्या दूसरे शरीर में भी प्रवेश कर सकती है?

ओशो—कर सकती है। लेकिन दूसरे मृत शरीर में प्रवेश करने का कोई अर्थ और प्रयोजन नहीं रह जाता। क्योंकि दूसरा शरीर इस लिए मृत हुआ है कि उस शरीर में रहने वाली आत्मा उस शरीर में रहने में असमर्थ हो गई थी। वह शरीर व्यर्थ हो गया था। इसीलिए छोड़ा था। कोई प्रयोजन नहीं है, उस शरीर में प्रवेश करने का। लेकिन इस बात की संभावना है कि दूसरे शरीर में प्रवेश किया जा सके। लेकिन यह प्रश्न पूछना मूल्यवान नहीं है। कि हम दूसरे के शरीर में कैसे प्रवेश करें, अपने ही शरीर में हम कैसे बैठे हुए हैं। इसका भी हमें कोई पता नहीं है। हम दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की व्यर्थी की बातों पर विचार करने से क्या फायदा उठा सकते हैं। हम अपने ही शरीर में कैसे प्रविष्ट हो गई हैं, इसका भी हमें कोई पता नहीं है। हम अपने ही शरीर को कैसे जी रहे हैं, इसका कोई पता नहीं है। हम अपने ही शरीर से पृथक होकर अपने को देख सकें, इसका भी कोई अनुभव नहीं है। दूसरे के शरीर में प्रवेश का प्रयोजन भी नहीं है। लेकिन वैज्ञानिक रूप से यह कहा जा सकता है कि दूसरे के शरीर में प्रवेश संभव है। क्योंकि शरीर न दूसरे का है। और न अपना। सब शरीर दूसरे के है। जब मां के पेट में एक आत्मा प्रविष्ट करती है। तब भी वह शरीर में प्रवेश करती है। बहुत छोटे शरीर में प्रवेश हो रही है। ऐटमिक बाँड़ी में प्रवेश हो रही है। लेकिन शरीर तो है ही।

वह जो पहले दिन अणु बनता है मां के पेट में वह अणु आपके पूरे शरीर को रूपाकृति अपने में छिपाए हुए होता है। पचास साल बाद आपके बाल सफेद हो जायेंगे, यह संभावना भी उस छोटे से बीज छिपी थी। आपकी आँखों का रंग कैसा होगा। आपके हाथ कितने लंबे होंगे, आप स्वास्थ्य होंगे या बीमार। आप गोरे होंगे या काले, आपके बाल कैसे होंगे, सीधे या घुंघराले, ये तमाम बातें उस अणु में छुपी थीं। जो उस समय वह अणु एक छोटी सी देह लिए परिपूर्ण था। वह ऐटमिक बाँड़ी है, अणु शरीर, उस अणु शरीर में आत्मा प्रविष्ट होती है। उस अणु शरीर की जो संरचना है, उस अणु शरीर की जो स्थिति है, जो सिचुएशन है उसके अनुकूल आत्मा उसमें प्रविष्ट होती है।

और दुनिया में जो मनुष्य जाति का जीवन और चेतना रोज नीचे गिरती जा रही है। उसका एक मात्र कारण है कि दुनियाँ के दंपति श्रेष्ठ आत्माओं का जन्म देने की संभावना और सुविधा पैदा नहीं कर पा रहे। जो सुविधा पैदा का जा रही है, वह अत्यंत निकट आत्माओं के पैदा होने की सुविधा है। आदमी के मर जाने के बाद जरूरी नहीं है कि उस आत्मा को जल्दी ही जन्म लेने का अवसर मिल जाए। साधारण आत्माएँ, जो न बहुत श्रेष्ठ होती हैं, और न निकट होती हैं। तेरह दिन के भीतर नए शरीर की खोज कर लेती हैं। लेकिन बहुत निकट आत्माओं को रूकना पड़ता है। क्योंकि उतना निकट अवसर मिलना मुश्किल है। उन निकट आत्माओं को ही हम प्रेत कहते हैं। बहुत श्रेष्ठ आत्माएँ भी रूक जाती हैं। क्योंकि उन्हें श्रेष्ठ अवसर उपलब्ध नहीं मिलता। उन श्रेष्ठ आत्माओं को हम देवता कहते हैं।

पहली पुरानी दुनिया में भूत-प्रेतों की संख्या बहुत ज्यादा थी और देवताओं की संख्या बहुत कम। आज की दुनियाँ में भूत-प्रेतों की संख्या बहुत कम हो गई है और देवताओं की संख्या बहुत। क्योंकि देवता पुरुषों को पैदा होने का अवसर बहुत कम हो रहा है। भूत-प्रेतों को पैदा होने का अवसर बहुत तीव्रता से उपलब्ध हुआ है। तो जो भूत प्रेत रहे रह जाते हैं। मनुष्य के भीतर प्रवेश करने से, वे सारे के सारे मनुष्य जाति में प्रविष्ट हो गए हैं। इसीलिए आज भूत-प्रेत का दर्शन मुश्किल हो गया है। क्योंकि उसके दर्शन की कोई

मां के पेट में जो बच्चा निर्मित होता है, पहला अणु, उस पहले अणु में चौबीस जीवाणु पुरुष के होते हैं, चौबीस जीवाणु स्त्री के होते हैं। अगर चौबीस-चौबीस के दोनों जीवाणु मिलते हैं तो अड़तालीस जीवाणुओं का पहला सेल निर्मित होता है। अड़तालीस सेल से जो प्राण पैदा होता है, वह स्त्री का शरीर बनता है। अड़तालीस सेल से जो प्राण पैदा होता है, वह स्त्री का शरीर बनता है। उनके दोनों बाजू चौबीस-चौबीस के होते हैं—एक बैलेंस, एक संतुलित। पुरुष का जो जीवाणु होता है। वह सैतालीस जीवाणुओं का होता है। एक तरफ चौबीस होते हैं, एक तरफ तेईस। बस यह बैलेंस टूट या वहीं से व्यक्तित्व का; संतुलन टूट गया। हार्मनी टूट गई।

जरूरत नहीं है, आप अपने चारों ओर आदमी को देख लें, और उसका दर्शन हो जाता है। और देवता पर हमारा विश्वास कम हो गया है। क्योंकि देव पुरुष ही जब दिखाई न पड़ते हो तो देवता पर विश्वास करना बहुत कठिन है।

एक जमाना था कि देवता उतनी ही वास्तविकता थी, उतनी ही एकजुअलेंट थी जितना कि हमारे जीवन के और दूसरे सत्य हैं। अगर हम वेद के त्रिषियों को पढ़ें तो ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि देवताओं के संबंध में जो बात कर रहे हैं, वह किसी कल्पना के देवता के संबंध में बात कर रहे हैं। नहीं, वे ऐसे देवता की बात कर रहे हैं जो उनके साथ गीत गाता है, हंसता है, बात करता है, वे ऐसे देवता की बात कर रहे हैं। जो उनके साथ गीत गा रहे हैं जो उनके साथ पृथ्वी पर उनके साथ चल रहा हो। उनके अत्यंत निकट हैं। हमारा देव लोक से सारा संबंध विनिष्ट हो गया है। क्योंकि हमारे बीच ऐसे पुरुष नहीं जो सेतु बन सकें, जो ब्रिज बन सकें, जो देवताओं और मनुष्यों के बीच में खड़े हो सकें, जो एक दूसरे के बीच ब्रिज बना सके बात सके की देखो देवता कैसे होते हैं। और इसका सारा जिम्मा मनुष्य जाति के दांपत्य की जो व्यवस्था है, उस पर निर्भर करता है। मनुष्य जाति की दांपत्य की सारी की सारी व्यवस्था कुरुष, अगली और परवर्द्ध है।

पहली तो बात यह है कि हमने हजारों साल से प्रेमपूर्ण विवाह बंद कर दिए हैं। और विवाह हम बिना प्रेम के करते हैं। जो विवाह बिना प्रेम के होगा, उस दंपति के बीच कभी भी वह आध्यात्मिक संबंध उत्पन्न नहीं होता जो प्रेम से संभव था। उन दोनों के बीच कभी भी वह हार्मनी, कभी भी वह एकरूपता और

संगीत पैदा नहीं होता, जो एक श्रेष्ठ आत्मा के जन्म के लिए जरूरी है। उनका प्रेम केवल साथ रहने की वजह से पैदा हो गया सहचर्य होता है। उनके प्रेम में वह आत्मा का आंदोलन नहीं होता, जो दो प्राणों को एक कर देता है। शायद आपको पता न होगा, स्त्रियाँ पुरुषों से ज्यादा सुंदर क्यों दिखाई पड़ती हैं। शायद आपको ख्याल न होगा, स्त्री के व्यक्तित्व में एक राउंड नेस, एक सुडौलता क्यों दिखाई पड़ती है? शायद आपको ख्याल में न होगा। कि स्त्री के व्यक्तित्व में एक संगीत, एक नृत्य, एक इनर डॉस, एक भीतरी नृत्य क्यों दिखाई पड़ता है। जो पुरुष में दिखाई नहीं पड़ता। एक छोटा सा कारण है, बहुत बड़ा कारण नहीं है। एक छोटा सा, इतना छोटा कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। उतने छोटे से कारण पर व्यक्तित्व का इतना भेद पैदा हो जाता है।

मां के पेट में जो बच्चा निर्मित होता है, पहला अणु, उस पहले अणु में चौबीस जीवाणु पुरुष के होते हैं, चौबीस जीवाणु स्त्री के होते हैं। अगर चौबीस-चौबीस के दोनों जीवाणु मिलते हैं तो अड़तालीस जीवाणुओं का पहला सेल निर्मित होता है। अड़तालीस सेल से जो प्राण पैदा होता है, वह स्त्री का शरीर बनता है। अड़तालीस सेल से जो प्राण पैदा होता है, वह स्त्री का शरीर बनता है। उनके दोनों बाजू चौबीस-चौबीस के होते हैं—एक बैलेंस, एक संतुलित। पुरुष का जो जीवाणु होता है। वह सैतालीस जीवाणुओं का होता है। एक तरफ चौबीस होते हैं, एक तरफ तेईस। बस यह बैलेंस टूट या वहीं से व्यक्तित्व का; संतुलन टूट गया। हार्मनी टूट गई। स्त्री के दोनों पलड़े व्यक्तित्व के बराबर संतुलन के है। उससे सारे स्त्री का सौंदर्य, उसकी

सुडौलता, उसकी कला, उसके व्यक्तित्व का काव्य पैदा होता है। और पुरुष के व्यक्तित्व में जरा सी कमी है। उसका एक तरफ चौबीस जीवाणुओं से बना है और दूसरा तेईस कोष्ठ धारी जीवाणुओं से। अगर मां के चौबीस कोष्ठ धारी जीवाणु से मिलता है तो पुरुष का जन्म होता है। इस लिए पुरुष में एक बेचैनी है। उसका सारा जीवन उस असंतुलन से डोलाता रहता है। उसके जीवन में एक बेचैनी है। मैं यह कर लूँ, वह कर लूँ, एक चिंता गई नहीं की दूसरी तैयार, पूरा जीवन उस असंतुलन के कारण बन गया है। एक छोटी से घटना से शुरू होती है पुरुष की इस बेचैनी की शुरूआत। जो बाद में हजारों तूफानों में बदल जाती है, चंगेज खा, हिटलर, मुसोलिनी, नादिरशाही के अनेक रूपों में। उसके एक पलड़े में एक अणु कम है। उसका बैलेंस व्यक्तित्व कम है। स्त्री का पूरा है। स्त्री की हार्मनी पूरी है, उसकी लयबद्धता पूरी है। इतनी सी घटना इतना फर्क लाती है। हालाँकि इससे सत्री सुंदर तो हो सकी। लेकिन स्त्री विकासमान नहीं हो सकी। क्योंकि जिस व्यक्तित्व में समता है, वह विकास नहीं करता। वह उठर जाता है। पुरुष का व्यक्तित्व विषम है। विषम होने के कारण वह दौड़ता है, विकास करता है। चाँद पर जाएँगा, तारों पर जाएँगा। खोज-बीन करेगा। सोचगा-विचारगा। ग्रंथ लिखेगा। धर्म-निर्माण करेगा। न वह एक्स्ट्रे पर जाएँगी, न चाँद तारों पर जाएँगी। न वह धर्म की खोज करेगी। न ग्रंथ लिखेगी, न विज्ञान की शोध करेगी। वह कुछ भी नहीं करेगी। उसके व्यक्तित्व में एक संतुलन है, वह संतुलन उसे पार होने के लिए तीव्रता नहीं भरता।

छोटी सी बात के कारण से कि उसमें एक अणु कम है। और स्त्री ने सारी सभ्यता विकसित नहीं की, उसमें एक अणु पूरा है। इतनी छोटी सी घटना इतने व्यक्तित्व का भेद ला सकती है। मैं इसलिए यह कह रहा हूँ कि यह तो बायोलॉजिकली है, यह तो जीव-शास्त्र कहेगा कि इतना सा फर्क इतने भिन्न व्यक्तित्व को जन्म दे सकता है। और गहरे फर्क है, और इनर डिफरेंस है। पुरुष और स्त्री के मिलने से जिस बच्चे का जन्म होता है। वह उन दोनों व्यक्तियों में कितना गहरा प्रेम है, कितनी आध्यात्मिकता है। कितनी पवित्रता है, कितने प्रेरण फुल है, कितने प्रार्थना पूर्ण हृदय से एक वे एक दूसरे के पास आये हैं। इस पर निर्भर करता है। इस प्रेम और समर्पण की भाव दिशा में कितनी ऊँची आत्मा उनकी तरफ आकर्षित होती है, कितनी विराट आत्मा उनकी और खिंची चली आती है। कितनी महान दिव्य चेतना उस घर को अपना अवसर बनाती है, इस पर निर्भर करता है।

मनुष्य जाति क्षीण और दीन और दरिद्र और दुःखी होती चली जा रही है। उसके बहुत गहरे में कारण मनुष्य के दांपत्य का विकृत होना है। और जब तक हम मनुष्य के दांपत्य जीवन को सुकृत नहीं कर लेते, सुसंस्कृत नहीं कर लेते, जब तक उसे हम स्त्रिचुएलाइज नहीं कर लेते, जब तक हम मनुष्य के भविष्य को सुधार नहीं सकते। और दुर्भाग्य में उन लोगों का भी हाथ है, जिन लोगों ने गृहस्थ जीवन की निंदा की है और संन्यासी जीवन का बहुत ज्यादा शोरगुल मचाया है। उनका हाथ है। क्योंकि एक बार जब गृहस्थ जीवन कंडेम्ड हो गया, निंदित हो गया, तो उस तरफ हमने विचार करना छोड़ दिया। नहीं, मैं आपसे कहना चाहता हूँ, संन्यास के रास्ते से बहुत थोड़े से लोग ही परमात्मा तक पहुंच सकते हैं। बहुत थोड़े-से लोग, कुछ विशिष्ट तरह के लोग, कुछ अत्यंत भिन्न तरह के लोग संन्यास के रास्ते से परमात्मा तक पहुंचते हैं। अधिकतम लोग गृहस्थ के रास्ते से और दांपत्य के रास्ते से ही परमात्मा तक पहुंचते हैं। और आश्चर्य की बात है कि गृहस्थ के मार्ग से पहुंच जाना अत्यंत सरल है, सुलभ है, लेकिन उस तरफ कोई ध्यान नहीं देता। आज तक का सारा धर्म संन्यासियों के अति प्रभाव से पीड़ित है। आज तक का पूरा धर्म गृहस्थ के लिए विकसित नहीं हो सका। और अगर गृहस्थ के लिए धर्म विकसित होता, तो हमने जन्म के पहले क्षण से विचार किया होता कि कैसा आत्मा को आर्मांत्रित करना है, कैसी आत्मा को पुकारना है, कैसी आत्मा को प्रवेश देना है जीवन में। अगर धर्म की ठीक-ठीक शिक्षा हो सके और एक-एक व्यक्ति को अगर धर्म की दिशा में ठीक विचार, कल्पना और भावना दी जा सके, तो बीस वर्षों में आने वाली मनुष्य की पीढ़ी को बिलकुल नया बनाया जा सकता है।

वह आदमी पापी है जो आदमी आने वाली आत्मा के लिए प्रेमपूर्ण निमंत्रण भेजे वाली आत्मा के लिए प्रेमपूर्ण निमंत्रण भेजे बिना भोग में उतरता है। वह आदमी अपराधी है, उसके बच्चे नाजायज हैं—चाहे उसे बच्चे विवाह के द्वारा पैदा किए हों—जिन बच्चों के लिए उसने अत्यंत प्रार्थना और पूजा से और परमात्मा को स्मरण करके नहीं बुलाया है। वह आदमी अपराधी है। सारी संततियों के सामने वह अपराधी रहेगा। कौन हमारे भीतर प्रविष्ट। हम शिक्षा की फिक्र करते हैं, हम वस्त्रों की फिक्र करते हैं, हम बच्चों के स्वास्थ्य की फिक्र करते हैं, लेकिन बच्चों की आत्मा की फिक्र हम बिलकुल ही छोड़ दिए हैं। इससे कभी भी कोई अच्छी मनुष्य जाति पैदा नहीं हो सकती है।

इसलिए यह बहुत फिक्र मत करें कि दूसरे के शरीर में कैसे प्रवेश करें। इस बात की फिक्र करे कि आप इस शरीर में ही कैसे प्रवेश कर गए हैं।